

पद २५३

(राग: बिहाग – ताल: त्रिताल)

ऐसे गरिबनवाज प्रभुजी ॥ध्रु.॥ संकट पडे तब सुमरन कीनो । उधार
लियो गजराज ॥१॥ द्रुपदसुता की लज्जा राखी । लाखन चीर
बढाय महाराज ॥२॥ मानिक के प्रभु दीनदयाल । शरन आय की
लाज ॥३॥